SSLC MODEL EXAMINATION - MARCH 2021

HINDI IN - ANSWERKEY

1) बादलों में

2) वे

3) मेघों की छायाओं में गीली हवाएँ इधर उधर घूम रही थी और पेडों के तने अभी भी गीले थे ।मूंगफलियों के हरे खेतों में पीले फूल अभी भी गीले थे।बाजरे के लंबे पतले पातों में पानी की बूँदे अटकी हुई थी।बारिश की हवा में गीले खेतों और बारिश की हरियाली की गंध घुली हुई थी

4) क) खेतों के ऊपर बादल छाए हुए थे।

ख) गीली हवाएं चल रही थी।

ग) पेड़ों के तने पानी से गीले थे।

घ) मूंगफली के फूल का रंग पीला होता है।

ङ) सारा आसमान बादलों से भरा हुआ था।

Prepared by Anandakrishnan Edacheri , GHS Munnad

5) कवि के अनुसार मनुष्य को मनुष्य की तरह जानना चाहिए। अर्थात् एक व्यक्ति को उसकी निराशा, असहायता और संकट से जानना चाहिए।

6) क) उसकी हताशा को जानना

ग) उसकी मुसीबत को जानना

घ) उसकी असहायता को जानना

7)

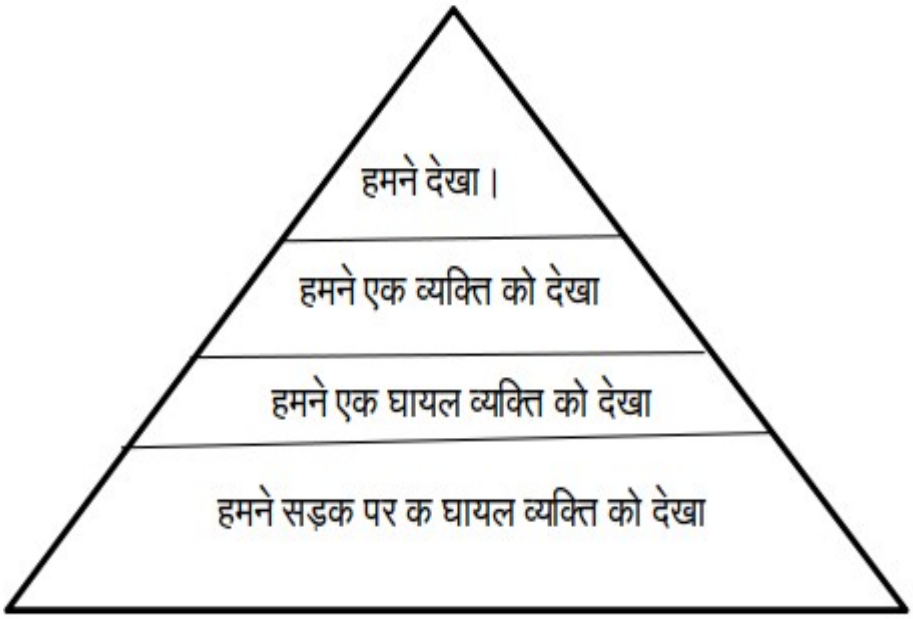

8) टिप्पणी

असहाय मनुष्य की सहायता करना ज़रूरी है।

मनुष्य को मनुष्य की तरह जानना चाहिए। सड़क पर घायल पडे या मुसीबत में पडे अपरिचित व्यक्ति को देखकर उसकी मदद करना सच्चे मनुष्य का दायित्व है। व्यक्ति को जानने के लिए उसकी आवश्यकता या समस्या पहचानकर उसे जिंदगी की ओर वापस ले आना ही असली जानना है। हमें सहजीवियों के साथ करुणा एवं स्नेहपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। संक्षेप में जो विपत्ति के समय दूसरों की सहायता करता है, वहीं सच्चा मानव है।

9) टूटे पहिए को

10) टूटा

11) टूटा पहिया यहाँ टूटे हुए मानव मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है। हमें किसी भी मूल्य और वस्तु को निस्सार, अनुपयोगी मानकर फेंकना नहीं

चाहिए क्योंकि पता नहीं कब समय बदले, परिस्थितियाँ विपरीत हो जाए और वह निस्सार वस्तु या मूल्य अपनेलिए सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध हो। तुच्छ सी लगने वाली वस्तू भी सांत्वना देने में समर्थ हो सकती है। जब दुनिया में मानव मूल्यों का नाश होता रहेगा, तो साधारण मनुष्य उन्हीं मानव मूल्यों को समेटकर समाज की भलाई के लिए कर्मनिरत रहेगा। मानवीय मूल्यों के संरक्षण से ही संसार की उन्नति होगी।

12) प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि‘‘ श्री. धर्मवीर भारती ’’ की कविता संग्रह ‘‘सात गीत वर्ष " से चुनी गई टूटा पहिया कविता से ली गई हैं।

महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि हमें यह संदेश देना चाहते है कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए ।

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि टूटे पहिए के द्वारा यह बताना चाहते हैं कि आज के इस बदलते युग में भी इतिहास की सामूहिक गति सत्य और धर्म को छोडकर असत्य और अधर्म के मार्ग पर चलने लगती है । उस समय सत्य के पक्ष, आम जनता को अधार्मिक शक्तियों के विरोध करने में में तुच्छ माननेवाले इस टूटा हुआ पहिया रूपी मानवीय मूल्य का सहारा लेना पडेगा । इसलिए हमें टूटा पहिया रूपी मानवीय मूल्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए । मुसीबत के अवसर पर अभिमन्यु केलिए टूटा पहिया जिस तरह उपयोगी बना उस तरह आम जनता के लिए मानवीय मूल्य काम आएगा । मनुष्य को अपनी मानवीय मूल्यों को त्याग न करने के लिए उपदेश देनेवाली यह कविता हर तरह से बिलकुल प्रासंगिक तथा अच्छी है । कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है , जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है ।

13) कलाम ढाणी पर काम करता है।

14) काम करने के लिए ।

15) चाय की दूकान में काम करनेवाला कलाम का सपना था- स्कूल जाना और टीवी में देखे लंबे बालोंवाला कलाम सा बनना ।कलाम बनने के मोह से वह खुद अपना नाम कलाम रख लेता है।बड़े आदमी बनने की आशा ही इसके पीछे छिपी है।

16. मां और भाटी सा के बीच वार्तालाप

भाटी सा : आओ आओ, दोनों कहाँ से आते हैं ?

माँ : हम दोनो जैसलमेर से आते है।

भाटी सा : बैठिए यहाँ से चाय पीजिए ।

माँ : नहीं साहब, मैंने अपने बेटे को यहाँ काम करने के लिए ले आया हूँ ।

भाटीसा : इतनी दूर से ?

मा: हाँ साहब।आपकी थड़ी पर काम देंगे?

भाटी सा : क्या नाम है उसका ?

माँ : इसका नाम छोटू है ।

भाटीसा : निष्ठा से काम करेगा क्या ?

माँ : हाँ साहब , मेरा बेटा तो बड़ा ईमानदार बालक है।

भाटी सा: अच्छा तो ठीक है , मै छोटू को हमारी चाय की थडी पर काम करने की अनुमति देता हूँ ।

माँ : तो क्या मैं इसे यहाँ छोड दूं?

भाटी सा : जरूर माँ, घबराने की कोई बात नहीं। यहाँ मैं उसको सभी सुविधाएँ दे दूँगा।

माँ : धन्यवाद साहब ।धन्यवाद ।

भाटी सा : धन्यवाद माँ ।

17)

कलाम की डायरी

2020
जुलाई
15

आज मेरे लिए खुशी का दिन है । माँ ने मुझे काम करने के लिए इस चाय की थडी पर छोड़ दिया । दुकान का मालिक भाटी सा है । बडा भला आदमी लगता है । क्या करूँगा. . . हमारी गरीबी के कारण ही अब यहाँ काम करना पडता है । कोई परवाह नहीं । मुझे एक बड़ी इच्छा है । कलाम के समान बनना । मैं इस चाय की थडी से पैसा कमाकर अपने लक्ष्य तक पहुँचूँगा ईमानदारी से काम करके सबकी प्रशंसा का पात्र बनना है । हाँ ऐसा ही करना है । छुट्टी मिलने पर माँ से फिर मिलूँगा ।

18) चार्ली गीत गाने लगा ।

19) चार्ली ने कहा।

20) चार्ली का गाना गाते समय स्टेज पर पैसों की बौछार शुरू हो गई ।गाना रोककर उसने अपने बालसहज भोलापन से घोषणा की कि अब पैसे बटोर कर ही मैं आगे गाऊँगा ।इस बात ने हॉल को हँसी घर में तब्दील कर दिया।

21) पटकथा

दृश्य:

स्थान : पब्लिक थियेटर

समय :शाम का समय

पात्र : पाँच साल का बच्चा चार्ली, मैनेजर और दर्शक ।

(चार्ली का गाना गाते समय दर्शक स्टेज पर पैसे फेंकने लगे।

चार्ली :(हाथ उठाकर) शुक्रिया। शकिया।

दर्शक : (सब मिलकर) गाइए गाइए । चार्ली : मैं पहले ये पैसे बटोरूँगा

, तब तक क्षमा करें ।

दर्शक : ज़रूर ज़रूर।

(चार्ली की घोषणा सुनकर सब मिलकर हँसते हैं। तब मैनेजरआता है।)

मैनेजर : चार्ली , पैसे बटोरने के लिए मैं मदद करूंगा ।

चार्ली : (संदेह से) अच्छा ठीक है।

(मैनेजर पोटली माँ को देने के लिए जाता है । चार्ली भी पीछा करता है।

पोटली माँ को देने के बाद चार्ली लौटता है)

22) पोस्टर

--- -- -- --- -- --- ---- -- --- --- --- ---

चाप्लिन स्मृति मंच

संगोष्ठी

विषय : सर्कस फिल्म का समकालीन महत्व ।

दिनांक : 16 अप्रैल 2021

समय : शाम के 4 बजे

स्थान: करोलबाग, दिल्ली

भाग लें सफल बनाएँ ।

* सबका स्वागत *

23) निम्न जाति के लोग ।

24) ठाकुर के कुएँ का ।

25) यह प्रसंग जाति प्रथा की ओर संकेत करता है। ऊँच नीच के भेद भाव को छोडना चाहिए । जाति प्रथा के कारण गरीब लोगों को कई प्रकार की सामाजिक कुरीतियों का शिकार बनना पडता है । किसी को जन्म के आधार पर नीच मानना निंदनीय अपराध है ।

26) बच्चों का ।

27) सामूहिक भोजन के आयोजन में बडों की भूमिका केवल सलाह देने तक सीमित होती है ।

28) रपट

फूलदेई का त्योहारधूमधाम से मनाया गया

हरिद्वार : हरिद्वार में इक्कीस दिनों से फूलदेई का त्योहार मना रहे थे। यह त्योहार पूर्ण रूप से बच्चों के द्वारा मनाया गया। बडों की भूमिका सिर्फ सलाह देना मात्र रहा। बच्चों ने रोज़ देर शाम तक रिंगाल से बनी टोकरियों में फूल चुने और गागरों में पानी भरकर उसके ऊपर रखे।

रोज सुबह गाँव भर बच्चों की टोलियाँ घूमी। पिछली शाम चुने गए फूल घरों की देहरियों पर सजाए गए। जिनके घरों में फूल सजाए गए, उन्होंने बच्चों को चावल, गुड, दाल आदि दिए। दक्षिणा में मिली यह सामग्री पूरे इक्कीस दिन तक इकट्ठी की गई। फूलदेई की विदाई क़े साथ यह उत्सव कल समाप्त हुआ। अंतिम दिन कल इकट्ठी की गई सामग्रियों से सामूहिक भोज बनाया गया। त्योहार के दिनों में बच्चों के द्वारा लोक गीतों की प्रस्तुति हुई थीं। नाटक, प्रतियोगिता, गरीब लोगों केलिए कपड़ा वितरण आदि विभिन्न कार्यक्रम इसके साथ चलाए गए।

29) बूढे मल्लाह को।

30) गालिब की चीज़ से तात्पर्य गालिब की गजलों से है।

31) स्थान;. . . .

तारीख

SSLC MODEL EXAMINATION - MARCH 2021

प्रिय मित्र ,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ?

मैं अब बंबई पहुँच गया । एक होटल में आराम कर रहा हूँ । मुझे भोपाल की यात्रा का सैर बहुत अच्छा लगा । तुम मेरा सूटकेस लेकर भोपाल स्टेशन में उतरते समय बहुत घबराया था । क्योंकि रात का समय था न ?

पर भोपाल में घूमते वक्त मेरी घबराहट दूर हुई । अविनाश तुम कितने भाग्यवान हो । भोपाल ताल और प्रकृति के नित्य संपर्क में रहना तुम्हारा भाग्य ही है । नाव में भोपाल ताल की यात्रा कितना आनंददायक था । बूढा मल्लाह जब्बार कितने अच्छे आदमी है । उनकी गजलें अब भी मेरे कानों में गूंज रही है । एक बार भी वहाँ आकर भोपाल ताल का सैर करने के लिए मन कहता है ।

अच्छा । वहाँ कैसे चल रहा है ? सब ठीक है न ? तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना ।पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में,

तुम्हारा मित्र

(हस्ताक्षर)

नाम

पता